रात्रीक्लास,– ओम्शान्ति 21–2–68

बाहर से सर्विस समाचार आता है। यहाँ फिर है मधुबन की मुरली। जिसको सिर्फ ब्रह्मा(कुमा)र–ब्रह्माकुमारियां ही नम्बरवार समझती हैं। अभी तुम समझते हो हम मालिक थे। हमारा राज्य था। आधा कल्प राज्य किया, फिर माया ने छीन लिया। फिर बाबा आकर माया पर जीत पहनाते हैं। फिर तुम जगत के मालिक बन जाते हो। तुम बच्चों को तो है हम जीत पाते हैं और हारते है। हराते कैसे हो, जीतते कैसे–कैसे हो , यह भी समझते हो। गाते भी हैं ना माया ते हारे हार है ..... परन्तु जानते नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है आधा कल्प हम देवी–देवताओं ने राज्य किया, फिर माया के राज्य में हराय दिया । हम राज्य करते थे। 84 जन्म पूरे होते हैं , फिर हम जीत पहनते हैं। लड़ाई आदि है नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं तुम माया के कारण पतित बने हो। अभी मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। विकर्म भी विनाश होंगे। अभी जितना जो दैवीगुण धारण करे और आप समान बनावे।

म्युजियम, प्रदर्शनी का नाम भी बदल जावेगा एक दिन। जो क्लीयर नाम होगा वह बदली करेंगे

21.2.68 2

समझाने लिए। फिर भी पढ़ते हैं। दिन–प्रतिदिन नई–2 प्वाइंट्स समझाई जाती हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान कैसे बने हैं वह भी समझाना पड़े। 84 जन्म लेते–2 तमोप्रधान बने हैं। फिर अभी सतोप्रधान बनने लिए याद की यात्रा। यह है रीयल यात्रा। वह भक्ति मार्ग की यात्रा, यह है ज्ञान मार्ग की यात्रा। घर जाकर फिर राजधानी में आना है। वह तो यहां ही धक्के खाते रहते हैं। ह... को अपना राज्य था। श्रीमत पर लिया था। फिर माया ने हराया। हरेक की बुद्धि में यह याद रहे तो नशा रहेगा। हम यद्ध के मैदान में है। अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह तो जैसे सहज बात हो गई है राज्य लेना और गंवाना। दुनिया को पता नही हम कैसे हराते हैं। बाप ने समझाया है माया भी शक्तिवान है। इस समय तुम बाप को याद करने से शक्ति पाते हो माया पर जीत पाने की। आयु भी बड़ी होती है। पवित्रता भी है। भेंट की जाती है कलियुग और सतयुग की। भेंट भी संगम पर की जाती है। बाप संगम युग पर ही आते हैं। जो संगम युग पर नहीं होते वह भेंट को जानते ही नहीं। यह तो तुम ही समझा सकते हो । करोड़ों मनुष्य हैं। उनमें से माला कितनी छोटी बनती है। उंच इम्तहान में थोड़े ही पास होते हैं ना। यहां भी ऐसे हैं। माला नम्बरवार बनती है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। थर्ड प्रजा को कहेंगे। तुम कोई से भी लिखत में पूछ सकते हो। पहले तुम जैसे बेबियां थे। आस्ते–2 अब पढ़ते जाते हो, समझाते जाते हो। मेहनत तो लगती है ना। आत्मा को 84 जन्म कैसे लेनी पड़ती है। कितनी छोटी आत्मा है। उनमें ड्रामा का पार्ट भरा हुआ है। बातें तो बहुत सहज हैं समझने की। बाप जो समझाते हैं वही राईट है। हम भारतवासी राजाई में थे ना। अभी आयरन एज्ड में आ गये हैं।फिर जरूर गोल्डेन एज्ड के बनेगें। तुम लिखते भी ऐसे हो। तुम देवताओं के पुजारी हो तो जरूर देवता धर्म के हो ना। सिर्फ देवता क्यों नहीं समझते हो? क्योंकि पतित बन पड़े हो। (झा)ड़ वही है सिर्फ तमोप्रधान बन गई है। यह खेल है ही पवित्र अपवित्र ..... का। पतित जब बनते हैं तो पतित–पावन बाप को बुलाते हैं हे बाबा, आकर हम पतितों को पावन बनाओ। शिवबाबा का नाम भी है। वह निराकार है; परन्तु शिव जयन्ति कहा जाता है तो जरूर यहां आते है ना। बाप कहते है मैं तो इनमें प्रवेश कर तुमको रास्ता बताता हूं।मेरा पार्ट ही है नर्कवासी को स्वर्ग वासी बनाना। पराये देश पतित तन में आता हूं। यह पढ़ाई है। पढ़ाई से पद होगा। बाप ही आकर रास्ता बताते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाने आया हूं। तो मेरी श्रीमत पर चलो। इस समय ही मेरा पार्ट है। फिर सतयुग में तो सुख तुमको मिलनी ही है। इसमें गुप्त मेहनत है। स्मृति आई है हम विश्व के मालिक बनते हैं। तो खुशी रहनी चाहिए ना। माया पर जीत पानी है। योगबल का अर्थ है याद। याद में भी बैठो। स्वदर्शनचक्रधारी भी बनते हो स्वधर्म में भी टिकते हो। चक्कर को भी याद करना है। अपन को अशरीरी आत्मा भी समझना है। आत्मा में ही यह ज्ञान ठहरता है। समय आ जाता है तो फिर कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। अभी टाईम है याद की यात्रा में जाने का। बाप की याद मे

रहने से ही जंक निकलती जावेंगी। बहन भाई से भी पार जाना चाहिए। इसमें क्रिमनल एसाल्ट न होंगा। फिर इनसे भी इनको आत्मा समझाना है। शरीर से भी निकल जाना है। नंगे आये थे नंगे जाना है। कोई भी चीज़ का आवरन न हो। आवाज़ से भी पार जाना है। हम जाते हैं अपने धाम। जैसे वह पार्ट बजा कर घर चले जाते हैं। यह है बेहद की बात। अशरीरी आये फिर यहां आकर पार्ट बजाया फिर अशरीरी हो जाना है। मुक्तिधाम में जाने, जीवनमुक्ति में आने की नालेज तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते हैं।